# Eklavya University

## Bachelor of Art

## (Jain and Prakrit Studies)

**Session 2022-23 ( से लागू )**

NEP 2020

**II Year**

# पाठ्यक्रम

## भाग अ – परिचय

| कार्यक्रम : डिप्लोमा | कक्षा : बी.ए. द्वितीय वर्ष | वर्ष : द्वितीय | सत्र : 2022–23 |
|---|---|---|---|

**विषय : जैन और प्राकृत अध्ययन**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | पाठ्यक्रम का कोड | EV A2-JAPR1T |
| 2. | पाठ्यक्रम का शीर्षक | जैनदर्शन एवं प्राकृत व्याकरण (प्रश्न पत्र – 1) |
| 3. | पाठ्यक्रम का प्रकार : (कोर कोर्स / इलेक्टिव / जेनेरिक इलेक्टिव / वोकेशनल / ...........) | मेजर–1 |
| 4. | पूर्वापेक्षा (Prerequisite) (यदि कोई हों) | इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए छात्र ने विषय.. जैन और प्राकृत का अध्ययन कक्षा / बी.ए. प्रथम वर्ष / प्रमाण पत्र / उत्तीर्ण किया हो।.......... इस पाठ्यक्रम को निम्नलिखित विषयों के छात्रों द्वारा एक वैकल्पिक विषय के रूप में चुना जा सकता है :– सभी के लिए उपलब्ध (Open For all) |
| 5. | पाठ्यक्रम अध्ययन की परिलब्धियां (कोर्स लर्निंग आउटकम) (CLO) | 1. छात्रों के चारित्रिक विकास में अत्यन्त उपयोगी।<br>2. सार्वभौमिक दृष्टि से आध्यात्मिक उन्नयन में सहायक।<br>3. भारतीय दार्शनिक चिन्तन की वैज्ञानिकता का अवबोध।<br>4. भारतीय संस्कृति एवं कलाओं से परिचित कराना।<br>5. छात्रों के बौद्धिक एवं मानसिक विकास के साथ भाषा अवबोध हेतु महत्त्वपूर्ण।<br>6. छात्रों को काव्य विधा एवं लेखन कला में दक्ष बनाना।<br>7. प्राकृत में वाक्य निर्माण और प्रयोग का ज्ञान कराना।<br>8. प्राकृत में अनुवाद एवं संभाषण कौशल का विकास। |
| 6. | क्रेडिट मान | 06 |
| 7. | कुल अंक | अधिकतम अंक : 30 + 70 — न्यूनतम उत्तीर्ण अंक : 33 |

## भाग ब – पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

**व्याख्यान की कुल संख्या–ट्यूटोरियल–प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में) : L-T-P:- 03**

| इकाई | विषय | व्याख्यान की संख्या |
|---|---|---|
| I | (अ) आस्तिक दर्शन : (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त तथा मीमांसा)।<br>(ब) नास्तिक दर्शन : (चार्वाक, जैन एवं बौद्ध) – उक्त दर्शनों का सामान्य परिचय अपेक्षित है। | 15 |

| | | |
|---|---|---|
| II | (अ) अस्तिकाय का स्वरूप और पांच अस्तिकाय।<br>(ब) द्रव्य का स्वरूप और षड्द्रव्य।<br>(स) सात तत्त्वों और नव पदार्थों का सामान्य परिचय। | 15 |
| III | (अ) ज्ञान का लक्षण, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान।<br>(ब) प्रमाण का लक्षण, प्रत्यक्ष और परोक्ष प्रमाण। | 15 |
| IV | (अ) **तद्धित प्रकरण** : (सामान्य प्रत्यय, भावार्थक प्रत्यय, परिणामार्थक प्रत्यय, श्रेष्ठार्थक प्रत्यय) नियम तथा उदाहरण अपेक्षित हैं।<br>(ब) **प्राकृत निबन्ध** : प्राकृत भाषा में निबन्ध लेखन / पत्र लेखन / वार्ता लेखन / संभाषण / लघुकथा लेखन। | 15 |
| V | (अ) **समास** : (सिद्धहेमशब्दानुशासन) विग्रह एवं समास का ज्ञान तथा समास के भेदों का अवबोध अपेक्षित है।<br>(ब) **लिंगानुशासन** – लिंग विचार, स्त्री प्रत्यय और उनके प्रयोग। | 30 |

**सार बिंदु (की वर्ड) / टैग : आस्तिक, नास्तिक, दर्शन, तद्धित, निबन्ध, संभाषण, समास।**

**भाग स – अनुशंसित अध्ययन संसाधन**

अनुशंसित सहायक पुस्तकें / ग्रंथ / अन्य पाठ्य संसाधन / पाठ्य सामग्री : –


1. ''भारतीय दर्शन'' – आचार्य बलदेव उपाध्याय – चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
2. ''भारतीय दर्शन''– डॉ उमेश मिश्र – चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. ''जैनदर्शन'' – आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री।
4. ''जैन दर्शन'' – पं. महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य, गणेश प्रसाद वर्णी शोध संस्थान, वाराणसी
5. ''जैन धर्म'' – पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री।
6. ''जैन धर्म और दर्शन'' –मुनि प्रमाण सागर जी महाराज।
7. ''जैन धर्म दर्शन'' – डॉ. मोहनलाल मेहता, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी।
8. ''प्राकृत व्याकरण'' – आचार्य हेमचन्द्र, के. वी. आप्टे, प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत भवन, वाराणसी, 1995
9. ''प्राकृत बोध'' – आचार्य सुनीलसागर जी महाराज, प्रकाशन – जैन संस्कृति शोध संस्थान, इन्दौर, 2009।
10. ''प्राकृत रचना भास्कर– मुनि प्रणम्यसागर जी महाराज : प्रकाशन आचार्य अकलंकदेव जैनविद्या शोधालय समिति उज्जैन (म.प्र.)
11. ''प्राकृत व्याकरण'' – मुनि प्यारचंद, आगम समता एवं अहिंसा शोध संस्थान, उदयपुर
12. ''प्राकृत व्याकरण'' – डॉ. कमलचन्द सोगाणी, प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर


Nidhi आशीष जैन

13. ''प्राकृत रचनोदय'' — डॉ. उदयचन्द्र जैन, उदयपुर

14. ''प्राकृत विद्या प्रवेशिका'' — आचार्य प्रज्ञसागर जी, प्रकाशन : भारतीय ज्ञानपीठ, सं. 2015

15. ''प्राकृत स्वयं–शिक्षक'' —डॉ. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती संस्थान, जयपुर

16. ''प्राकृत वाक्य रचना बोध'' — युवाचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूं।

17. पाश्चात्य दर्शन — चन्द्रधर शर्मा, मनोहर प्रकाशन जतनबर, वाराणसी

18. जैन–धर्म–दर्शन के विविध आयाम — डॉ. वशिष्ट नारायण सिन्हा, प्रकाशन — प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान वैशाली, बिहार, संस्करण — 2016

19. प्राकृत–संस्कृत के समानांतर अध्ययन — डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव, प्रकशन — भाषा–साहित्य–संस्थान, त्रिवेणी रोड, इलाहाबाद, संस्करण — 1984

अनुशंसित डिजिटल प्लेटफार्म — वेब लिंक, ई–सोर्सेस, ई–पुस्तकालय, जैन ई लायब्रेरी, विकीपीडिया, ज्ञानगंगा।

## भाग द — अनुशंसित मूल्यांकन विधियाँ :

अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियाँ : लिखित परीक्षा, सतत आंतरिक मूल्यांकन, साक्षात्कार विधि, वाग्व्यवहार विधि, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न निर्माण।

अधिकतम अक : 100

सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक : 30 विश्वविद्यालय परीक्षा (UE) अंक : 70

| | | |
|---|---|---|
| **आंतरिक मूल्यांकन :**<br>**सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) :** | क्लास टेस्ट<br>असाइमेंट / प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन) | कुल अंक : 30 |
| **आकलन :**<br>**विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE) :**<br>**समय– 03 : 00 घंटे** | अनुभाग (अ) : वस्तुनिष्ठ प्रश्न<br>अनुभाग (ब) : लघु प्रश्न<br>अनुभाग (स) : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न | कुल अंक : 70 |

कोई टिप्पणी / सुझाव :

## भाग ब – पाठयक्रम की विषयवस्तु

व्याख्यान की कुल संख्या – ट्यूटोरियल – प्रायोगिक (प्रति सप्ताह घंटे में) : L-T-P:-03

| इकाई. | विषय | |
|---|---|---|
| I | (अ) भारतीय काव्यशास्त्र एवं प्राकृत महाकाव्य।<br>(ब) प्रमुख महाकाव्यों का परिचय – सेतुबन्ध, गउडवहो, लीलावईकहा, द्वयाश्रयकाव्य। | 15 |
| II | (अ) **गउडवहो** – विन्ध्यवासिनी स्तुति मात्र (पाठयांश की व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)<br>(ब) **लीलावईकहा** – गाथा 1 –50 तक (पाठयांश की व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न) | 15 |
| III | नाट्यशास्त्र सत्रहवें अध्याय से नाट्योत्पति एवं नाट्य प्रयोजन से संबंधित पाठ्यांशों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक प्रश्न। | 15 |
| IV | **प्राकृत नाटक** : प्राकृत के प्रतिनिधि नाटककार एवं उनकी कृतियों का सामान्य परिचय। (भास, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, श्रीहर्ष, भवभूति) | 15 |
| V | '**मृच्छकटिकम**' : द्वितीय अंक मात्र (प्राकृत पाठ्यांशों की व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)। | 30 |

सार बिन्दु (की वर्ड) / टैग : शास्त्र, नाट्य, काव्य, महाकाव्य, नाटक, प्रतिनिधि।

## भाग स – अनुशंसित अध्ययन संसाधन

अनुशंसित सहायक पुस्तकें / ग्रंथ / अन्य पाठ्य संसाधन / पाठ्य सामग्री :

संदर्भ ग्रंथ :


1. नाट्यशास्त्रम् – (भरतमुनि प्रणीत) बाबूलाल शुक्ल, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदासकृत, कपिलदेव द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
3. संस्कृत नाटक – ए. बी. कीथ, अनुवादक उदयभानु सिंह, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी।
4. नाट्यशास्त्र का इतिहास – पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
5. मृच्छकटिकम्– रमाशंकर त्रिपाठी, हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या सहित, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1969
6. प्राकृत साहित्य का इतिहास : डॉ. जगदीशचन्द्र जैन, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
7. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी
8. प्राकृत प्रवेशिका : लेखक श्री आल्फ्रेड सी. वूल्लर, अनुवाद – बनारसीदास जैन, प्रकाशन : पंजाब यूनिवर्सिटी, लाहौर।


Ashshay आशीष जैन

9. प्राकृत विमर्श – सरयू प्रसाद अग्रवाल, प्रकाशन : लखनऊ विश्वविद्यालय।

10. सेतुबन्ध (हिन्दी अनुवाद) – डॉ. रघुवंश, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

11. प्राकृत–गद्य–पद्य–बंध (भाग – 3) – प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली।

12. प्राकृत भाषा और साहित्य – डॉ. ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, प्राकृत जैनशास्त्र और अहिंसा शोध संस्थान, वैशाली।

अनुशंसित डिजिटल प्लेटफार्म – वेब लिंक, ई–सोर्सेस, ई–पुस्तकालय, जैन ई लायब्रेरी, विकीपीडिया, ज्ञानगंगा।

**भाग द – अनुशंसित मूल्यांकन विधियाँ :**

**अनुशंसित सतत मूल्यांकन विधियाँ** : लिखित परीक्षा, सतत आंतरिक मूल्यांकन, साक्षात्कार विधि, वाग्व्यवहार विधि, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघु उत्तरीय प्रश्न निर्माण।

**अधिकतम अंक** : 100

**सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) अंक** : 30 विश्वविद्यालय परीक्षा (UE) अंक : 70

| | | |
|---|---|---|
| **आंतरिक मूल्यांकन :**<br>**सतत व्यापक मूल्यांकन (CCE) :** | क्लास टेस्ट<br>असाइमेंट / प्रस्तुतीकरण (प्रेजेंटेशन) | कुल अंक : 30 |
| **आकलन :**<br>**विश्वविद्यालयीन परीक्षा (UE)**<br>**समय – 03.00 घंटे** | अनुभाग (अ) : वस्तुनिष्ठ प्रश्न<br>अनुभाग (ब) : लघु उत्तरीय प्रश्न<br>अनुभाग (स) : दीर्घ उत्तरीय प्रश्न | कुल अंक : 70 |

कोई टिप्पणी / सुझाव :